ركوعاتها ٢٥

الصُّدُوۡرِ ﴿١٠﴾ اِنَّ رَبَّهُمۡ بِهِمۡ يَوۡمَئِذٍ لَّخَبِيۡرٌ ﴿١١﴾

सीनों में है बेशक उन के रब को उस दिन[10] उन की सब ख़बर है[11]

ركوعها ١ ﴿١٠١ سُوۡرَةُ الۡقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ ٣٠﴾ اياتها ١١

सूरए क़ारिअ़ह मक्किय्या है, इस में ग्यारह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

اَلۡقَارِعَةُ ﴿١﴾ مَا الۡقَارِعَةُ ﴿٢﴾ وَمَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا الۡقَارِعَةُ ﴿٣﴾

दिल दहलाने वाली क्या वोह दहलाने वाली और तू ने क्या जाना क्या है दहलाने वाली[2]

يَوۡمَ يَكُوۡنُ النَّاسُ كَالۡفَرَاشِ الۡمَبۡثُوۡثِ ﴿٤﴾ وَتَكُوۡنُ الۡجِبَالُ كَالۡعِهۡنِ

जिस दिन आदमी होंगे जैसे फैले पतंगे[3] और पहाड़ होंगे जैसे धुन्की (धुनी हुई)

الۡمَنۡفُوۡشِ ﴿٥﴾ فَاَمَّا مَنۡ ثَقُلَتۡ مَوَازِيۡنُهٗ ﴿٦﴾ فَهُوَ فِيۡ عِيۡشَةٍ

ऊन[4] तो जिस की तोलें भारी हुईं[5] वोह तो मन मानते ऐश में

رَّاضِيَةٍ ﴿٧﴾ وَاَمَّا مَنۡ خَفَّتۡ مَوَازِيۡنُهٗ ﴿٨﴾ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ﴿٩﴾ وَمَاۤ

हैं[6] और जिस की तोलें हलकी पड़ीं[7] वोह नीचा दिखाने वाली गोद में है[8] और तू

ركوعاتها ٢٦

اَدۡرٰىكَ مَاهِيَهۡ ﴿١٠﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ﴿١١﴾

ने क्या जाना क्या नीचा दिखाने वाली एक आग शो'ले मारती[9]

10 : या'नी रोज़े क़ियामत जो फ़ैसले का दिन है। 11 : जैसी कि हमेशा है, तो उन्हें आ'माले नेक व बद का बदला देगा। 1 : सूरए "अल क़ारिअ़ह" मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ़, आठ आयतें, छत्तीस कलिमे, एक सो बावन ह़र्फ़ हैं। 2 : मुराद इस से क़ियामत है जिस की होल व हैबत से दिल दहलेंगे और "क़ारिअ़ह" क़ियामत के नामों से एक नाम है। 3 : या'नी जिस त़रह पतंगे शो'ले पर गिरने के वक़्त मुन्तशिर होते हैं और उन के लिये कोई एक जिहत मुअ़य्यन नहीं होती हर एक दूसरे के ख़िलाफ़ जिहत से जाता है, येही ह़ाल रोज़े क़ियामत ख़ल्क़ के इन्तिशार का होगा। 4 : जिस के अज्ज़ा मुतफ़र्रिक़ हो कर उड़ते हैं, येही ह़ाल क़ियामत के होल व दहशत से पहाड़ों का होगा। 5 : और वज़्न दार अ़मल या'नी नेकियां ज़ियादा हुईं 6 : या'नी जन्नत में। मोमिन की नेकियां अच्छी सूरत में ला कर मीज़ान में रखी जाएंगी तो अगर वोह ग़ालिब हुईं तो उस के लिये जन्नत है और काफ़िर की बुराइयां बद तरीन सूरत में ला कर मीज़ान में रखी जाएंगी और तोल हलकी पड़ेगी क्यूं कि कुफ़्फ़ार के आ'माल बात़िल हैं, उन का कुछ वज़्न नहीं, तो उन्हें जहन्नम में दाख़िल किया जाएगा। 7 : ब सबब इस के कि वोह बात़िल का इत्तिबाअ़ करता था 8 : या'नी उस का मस्कन आतशे दोज़ख़ है। 9 : जिस में इन्तिहा की सोज़िश व तेज़ी है। अल्लाह तआ़ला उस से पनाह में रखे।